THE NARRATIVE

FACT STORY

WWW.THENARRATIVEWORLD.COM

ल्हासा विद्रोह 1959 (तिब्बत)

- वर्ष 1959 में चीनी साम्राज्यवादी सरकार ने तिब्बत पर अपने कब्जे को मजबूत करने के लिए प्रयासों को तेज कर दिया था, ऐसी भी आशंका थी कि चीनी सरकार तिब्बती धार्मिक गुरु दलाई लामा को अपहृत कर सकती हैं
- चीनी सत्ता व्यवस्था के कुकृत्यों से परिचित तिब्बतियों ने अपने धार्मिक गुरु दलाई लामा को बचाने के लिए उनके महल के बाहर विशाल मानव दीवार बना दी
- हालांकि तिब्बत पर कब्जे को आतुर तानाशाह माओ के आदेश पर चीनी सेना ने राजधानी ल्हासा पर अपना दबाव बढ़ा दिया परिणामस्वरूप युवा धार्मिक गुरु दलाई लामा को अपने अनुयायियों के साथ कठिन हिमालयी मार्ग से भारत में निर्वासन को बाध्य होना पड़ा
- दलाई लामा के निर्वासन के उपरांत ल्हासा में हुए संघर्ष में 80000 तिब्बती सैनिकों (गुरिल्ला लड़ाकों) और चीनी सेना के बीच भीषण लड़ाई हुई
- अन्तोगत्वा चीनी सेना के अनुपात में संख्या में बेहद कम तिब्बती सैनिक पराजित हुए, ल्हासा की सड़कें रक्तपात की गवाह बनी, प्रामाणिक तौर पर लगभग 87000 तिब्बती नागरिकों की नृशंस हत्या कर दी गई, मठों में लूटपाट और आगजनी की गई,
- वामपंथी तानाशाह की निर्णायक विजय हुई और तिब्बती विद्रोह को कुचल कर स्वतंत्र तिब्बत को चीन के अधीन कर लिया गया

/tnworldofficial /+91 9713734000 /tnworldofficial

FACT STORY

नम्बी नारायणन षड्यंत्र, केरल 1994

- इसरो के पीएसएलवी एवं जीएसएलवी के लिए अब भी बेहद कारगर माने जाने वाले 'विकास इंजन' को तैयार करने वाले नम्बी नारायणन देश के चुनिंदा वैज्ञानिकों में से एक माने जाते हैं।
- 1970 के दशक में जब इसरो सॉलिड तरल ईंधन की राकेट तकनीक पर काम कर रहा था तो वो नम्बी ही थे जिन्होंने लिक्विड तरल ईंधन तकनीक में (cryogenic rocket engine) भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयास शुरू किया।
- माना जाता है कि वे इस तकनीक में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के बेहद करीब थे जब विदेशी शक्तियों के इशारे पर कांग्रेस सरकार की पुलिस द्वारा उनके विरुद्ध षड्यंत्र रच कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।
- गिरफ्तारी के उपरांत उन्हें प्रताड़ित कर अपने ही अधिकारियों को फंसाने के लिए उनपर दबाव बनाया गया।
- उनपर पाकिस्तान के साथ तकनीक साझा करने का निराधार आरोप लगाया गया जिसे केरल की क्रमश: वामपंथी सरकारों ने बनाए रखा।
- लंबी लड़ाई लड़ने के उपरांत माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने नारायणन को दोषमुक्त करार दिया हालांकि उनके 7 वर्षो तक इसरो से बाहर रहने के दौरान भारत तरल ईंधन तकनीक में पीछे रह गया।
- वर्ष 2019 में वर्तमान केंद्र सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से अलंकृत कर उनकी राष्ट्रसेवा के लिए उनका आभार जताया हालांकि कांग्रेसी- वामपंथी सरकारों में उनके साथ हुए षड्यंत्र की सच्चाई अभी भी सामने आनी बाकी है।